B.A. Pt II - Sem IV

Paper - C - 8

History of West Asia

अरब लीग का गठन एवं कार्य

द्वितीय महायुद्ध के बाद अरबों में राष्ट्रीयता का विकास तेजी से हुआ। लगभग 400 वर्षों तक अरब तुर्की दासता का भार सहन किया था। अरब नेताओं ने अब अरब राज्य की स्थापना के स्वप्न देखने प्रारंभ कर दिए। 1924-26 ई० में इब्न सऊद ने सऊदी अरब जैसे विशाल राष्ट्र का निर्माण किया। उसने जून 1926 ई० में मक्का में पान-इस्लामी कांग्रेस बुलवाई। इसके कारण अरबों में एकता और राष्ट्रीयता का जागरण हुआ। 22 march 1945 ई० को अरब लीग की स्थापना हुई। अरब लीग के प्रमुख सात सदस्य अरब राज्य थे — मिस्र, सऊदी-अरब, लेबनान, इराक, सीरिया, यमन और ट्रांसजोर्डन।

अरब लीग के उद्देश्य — (i) इसका प्रमुख उद्देश्य सदस्य राष्ट्रों के बीच हुए एकता और आपसी वैमनस्यता का शांतिपूर्वक निबटारा करना। (ii) एक दूसरे को वाह्य आक्रमण से रक्षा करने के समझौते को क्रियात्मक रूप देना। (iii) आपसी संबंधों को सुदृढ़ बनाना। (iv) समय-समय पर लीग की बैठक बुलाना (v) राजनीति क्षेत्र में सहयोग करना (vi) सदस्य राष्ट्रों की स्वाधीनता एवं प्रभुसत्ता की रक्षा करना (vii) अरब राष्ट्रों के संबद्ध कार्यों पर विचार विमर्श करना। (viii) आर्थिक वित्तीय, सांस्कृतिक एवं परिवहन संबंधी क्षेत्रों में पारस्परिक सहयोग करना इत्यादि थी।

इसके अलावा पराधीन अरबों को स्वतंत्र बनाना, फिलिस्तीन पर अरबों का दावा स्वीकार करते हुए इसे यहूदियों से मुक्त कराना था। इस प्रकार अरब लीग अरब राज्यों की एकता के लिए प्रयास

P.T.O

करने का एक साधन बन गया।

अरब लीग के कार्य -

आरब लीग के समक्ष दो कार्य थे - राजनीतिक कार्य और गैर राजनीतिक कार्य।

राजनीतिक कार्य -

पराधीन राज्यों को स्वाधीनता दिलाना अरब राज्यों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण राजनीतिक कार्य था। अतः जून 1945 ई० में अरबलीग की पहली बैठक काहिरा में हुई। इस बैठक में एक प्रस्ताव पास कर कहा गया कि फ्रांस अरब प्रभावित राज्यों से अपनी सेनाएँ वापस बुला ले। यही भी कहा गया कि अरब राज्यों से ब्रिटेन भी अपनी सेना हटा ले।

दूसरी राजनीतिक समस्या ट्रिपोली की समस्या थी। अरब लीग इसके विभाजन के विरोध में था। उनका कहना था कि इस संबंध में जो भी निर्णय हो वह वहां के निवासियों के राय से हो।

तीसरी समस्या फिलिस्तीन की समस्या थी। अरब प्रतिनिधियों द्वारा एक समिति संगठित किया गया। एक फिलिस्तीन कार्यकारिणी का निर्माण हुआ, यहूदी सेना को नष्ट करने का निर्णय हुआ, उनके द्वारा जमीन खरीदने को रोकने का प्रयास किया गया। इस प्रस्ताव को इंगलैंड और अमेरिकी सरकार के प्रस्ताव को उसने

पास भेज दिए।

अरब लीग ने अपने सहायता- समर्थन से मिस्त्र के राष्ट्रीय आंदोलन को मजबूत बनाया। क्योंकि मिस्त्र विदेशी सेना को अपनी भूमि से मुक्त करने के लिए प्रबल आंदोलन कर रहे थे।

<u>गैर राजनीतिक कार्य</u> -

सभी अरब राज्य संगठित रूप से यहूदी- व्यापार और यहूदी- वस्तुओं का बहिष्कार करने का निर्णय लिया। July 1945 में एक आर्थिक एवं कृषि संबंधी कमीशन बनी जिसमें इन क्षेत्रों में सुधार लाने के प्रश्न पर विचार किया गया।

अरब लीग ने सांस्कृतिक और तकनीकी क्षेत्र में भी कार्य किए। अरब राज्यों के बीच विद्वानों का आगमन हुआ, अरबी भाषा की पुरानी पांडुलिपि को रक्षा की गई। एक अरब सांस्कृतिक सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें अरब के पुरातत्वी, डाक्टर, वैज्ञानिक इंजीनियर आदि लोगों ने भाग लिया। सामान्य एजेंसी की भी स्थापना की गई। अरब लीग की शाखा विश्व के प्रमुख देशों की राजधानियों में स्थापित की गई